Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

रमेश मेहता

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

काल बोध की कविताएं नई कविता की परम्परा से अलग किस्म की कविताएं हैं। इस अर्थ में भी कि वे अब नए सवालों से टकराने की पूरी तैयारी के साथ हैं और इस तरह कविता की किसी आगामी परम्परा को संकेतित करती हैं। अगर कश्मीर को कवि का स्थानीय घटक या निजत्व मान लिया जाए तो वह बोध के स्तर पर सपने के सच को सच ही समझ रहा है। खासकर अब कहीं भी निर्द्वंद्व रहना महज सपना है।

अपने सभी प्रश्नों में रमेश मेहता नई सदी के डर को वाणी देते हैं। वे डर से प्रताड़ित नहीं है परन्तु डर के वास्तव से खौफ खाते हैं। आदमी का अस्तित्व डर के प्रतिरूप में खड़ा है और प्रतिरूप अगर वास्तव का रूप ग्रहण करता है तो वह एक तरह का अतिरेक है। एक मामूली-सी इच्छा की परिपूर्ति में जब सच की प्रतीति का प्रश्न सामने आता है तो रमेश मेहता शाश्वत सन्नाटे को सामने ले आते हैं।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

कालबोध

रमेश मेहता की कविताएँ

उस चेले को
जिसे परखने का कभी
अवसर ही नहीं आया।
भाई अग्निशेखर को
प्रीतिपूर्वक
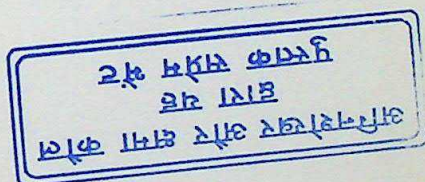
CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

कालबोध

(कविता-संग्रह)

रमेश मेहता

पवन प्रकाशन

ई-98, भागीरथी विहार, गोकुलपुरी, दिल्ली-110 094

फोन : 011-22843263

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

ISBN : 81-901856-4-0

© लेखक

❑

पवन प्रकाशन
ई-98 भागीरथी विहार
दिल्ली-110 094
फोन : 22843263

❑

संस्करण : प्रथम 2004

❑

लेजर टाईपिंग :
बग्गा कम्प्यूटर्स
3/29 सुभाष नगर,
नई दिल्ली-110 027
दूरभाष : 25498328

❑

मुद्रक
पवन ऑफसैट प्रेस
ई-98, भागीरथी विहार
दिल्ली-110 094

❑

आवरण चित्र
रमेश मेहता

मूल्य : 100.00 रुपए

KAALBODH (Hindi Poems) by Ramesh Mehta
Price : Rs. 100.00

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

पवित्रा और मुकुल को

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

सच

उसने मांगा
नींबू

उसके नथुनों में समा गई
नींबू की गंध

उसने मांगी
पवन
उसके चारों ओर बहने लगी
हवा

उसने मांगा
सच
दूर दूर तक फैल गया
सन्नाटा !

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

परंपरा

उसने परंपरा को ऐसे देखा
जैसे हम देखते हैं
गले में पड़ा हुआ
तावीज़

उसने परंपरा को ऐसे जाना
जैसे हम जानते हैं
आंगन में उग आए कुकुरमुत्ते को

उसने परंपरा को ऐसे झेला था
जैसे हम झेलते हैं
कठिन होते जाते संबंध

काश !
वह परंपरा को जान पाता
परंपरा में
डूब कर।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

शांति नहीं

उसने कहा प्रेम
कृष्ण की वंशी के स्वर
देर तक उसको
सहलाते रहे

उसने कहा अहिंसा
बुद्ध की मुस्कान
उस पर
करुणा बरसाती रही

उसने कहा
अपरिग्रह
नानक का 'तेरा', 'तेरा' का जाप
उसको जगाता रहा

उसने कहा
शांति
गांधी की छाती पर लगी गोली
एकाएक उसका पीछा करने लगी

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

सपने में दिन

लोहे के तार से
रबड़ का चक्का धकियाते
उसके पीछे-पीछे भागते
वह राजा हो जाता था
किसी संयोगिता को तलाशता हुआ

वह जंगल में जाता
बेर और गरने और बिल फल
जो मिलता
सहेजता
अपनी उपलब्धियों पर
लट्टू हो जाता

पक्के तालाब के किनारे
बूढ़े बरगद पर लटकते झूले पर झूलती
लड़कियां
उसे परियां दिखाई देतीं
जो अगली ही पेंग में
आकाश चली जायेंगी

'राहड़ों' के आसपास चित्र बनाते हुए
लोकगीत गातीं
भाई की उम्र-दराज़ी की दुआ मांगती
बहनें और उनकी सहेलियां
वैष्णों देवी की याद दिलाती थीं

उसके सपने अब भी वैसे ही हैं
दिन बदल गए हैं

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

युद्धबंदी

आकाश पर छाए थे बादल
बादलों जैसे
बिजली कौंध रही थी लगातार
बिजली की तरह
गड़गड़ाहट हो रही थी रुक-रुक कर
गड़गड़ाहट की तरह
सब कुछ अपने में समोए खड़ा था अंधेरा
अंधेरे की तरह
युद्धबंदी की तीसरी घोषणा हो रही थी
घोषणा की तरह

सुना है कहीं कुछ नहीं बदला है

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

पहेली

ऐसा क्यों होता है
सो रही होती है नदी
डोलती रहती है नाव बेख़बर

ऐसा क्यों होता है
नतमस्तक बैठे होते हैं हम
ईश्वर के सामने
कोसों दूर उससे

ऐसा क्यों होता है
एक साथ झेलते हैं हम
दु:ख
पर भूलते नहीं हैं साथ-साथ

ऐसा क्यों होता है
उतना ही नहीं होता
जीवन
जितना जानते हैं उसे
हम !

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

राजा निरबंसिया

राजा निरबंसिया
पंचतत्व में हुआ विलीन
सिंहासन खाली है
उत्तराधिकारी उदासीन

दूर की कौड़ी लाये हैं
सभासद
हम जिसके सिर पर हाथ रख देंगे
वही राजा हो जायेगा
सिंहासन ही तो भरना है -
भर जायेगा

हमारा संविधान बहुत लचीला है
कैसे भी तोड़ो-मरोड़ो
चीं तक नहीं करता है
राजा की झोली में पसर जाने के बाद
सो जाता है चैन की नींद
प्रजा के भाग्य पर प्रश्नचिह्न लगा कर

राजा ने खेत में उगाए हैं टिंडे
सब उसे तरबूज कह कर सराह रहे हैं
CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation
तरबूज से भी बड़ा कोई फल पैदा क्यों नहीं करते

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

वैज्ञानिकों को गरिया रहे हैं

बच्चे मग्न हैं खेलने में खेल
एक अकेला 'अग्निशेखर' चिल्लाता है
गला फाड़कर
राजा! तेरी नगरी में चोर
चौंक कर जागता है 'चरणदास चोर'
गुरु को दिए वचन का पालन करने
क्या फिर कोई सिरफिरा आया है
रानी ने इस बार
किसे अपने विशेष कक्ष में बुलाया है ?

राजा! तेरी नगरी में चोर

राजा के कानों में दुंदुभि बजाता
उसकी आंखों में आंज रहा है
काजल
एक काला चोर
राजा को अपनी आंखों से
अब कुछ भी दिखाई नहीं देता
और कोई कुछ नहीं कर सकता

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

कश्मीर – 1999

दस वर्षों के अन्तराल पर
उसने
कश्मीर की धरती को छुआ
चूमा
और आत्मविभोर हो गया।

लम्बे सूखे के बावजूद
वहाँ
अब भी हरियाली थी
बागों में खिले थे
रंग-रंग के फूल
झील डल पर
तैर रहे थे शिकारे
बूलिवार्ड से लेकर चार-चिनारी तक

क्षीर भवानी का जल
उसकी आशंका से
कहीं कम काला था
शंकराचार्य की पहाड़ी से
उसने देखा था
वितस्ता गुम हो गई थी
उसके स्थान पर जो बह रहा था
वह एक बड़ा सा
गंदा नाला था।

गुलमर्ग का मौसम
दूर-दूर तक बर्फ के न दिखाई देने पर भी
सुहाना था
घोड़े वालों की सूनी आंखों में
अतीत एक सपने सा झांक रहा था

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

होटल के द्वार खुले थे
उन्हें पर्यटकों का इन्तज़ार था
मालिक बता रहा था
यहां के होटलों में
अच्छा खाना बने
एक युग बीत गया था

लाल चौक और उसके आस पास
जस के तस खड़े
जले हुए भवन
तबाही के किस्से सुना रहे थे
श्रीनगर के बाहरी इलाकों में उगने वाले
कंक्रीट के जंगल
आतंकवाद का मुंह चिढ़ा रहे थे

'शक्ति स्वीट्स' के एक टेबुल पर बैठ
मिठाई टूंगते
सोचता है वह
यहां आतंकवाद कहां है ?
फौज का यहां होना
क्या माने रखता है?

तभी सुनाई दिया
रीगल सिनेमा के गेट पर
ग्रेनेड का एक ज़ोरदार धमाका
उसे लगा
मिठाई का स्वाद अचानक कसैला हो गया है
दस साल बाद
कश्मीर की धरती से
मन को हर्षा देने वाला उसका परिचय
अचानक विषैला हो गया है।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

सुबहे - कश्मीर

रोज़ की तरह
सूरज उगता है
सवेरे

रोज़ की तरह
होती हैं तलाशियां
तमाम रुकावटों को पार करते
काम पर जाते हैं लोग
सवेरे

कभी उठते हैं
खुश-खुश
और कभी
भुनभुनाते
दिन की शुरूआत से
तय होता है
उनका सारे दिन का
मूड़
सवेरे

रोज़ की तरह

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

घरों को लौटते हैं
थके - हारे डर
शाम को
रोज़ की तरह
सिजदा करते
जान की खैर मनाते
सो जाते हैं लोग
रात में

बरसों चुप रहने के बाद
सरगोशियों में ही सही
गा रही है
'पोशनूल'
वापसी का गीत

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

कश्मीर – I

ऐसा तो नहीं कि ठिठुरना
छोड़ दिया पहाड़ ने
रुक गई बहती हुई नदी
गाना भूल गई अल्हड़ मुटियार
रास्ता भूलने लगे
लौटते हुए पशु
बरसना भूल गई बारिश
या खिलना बिसर गई धूप

सब वैसा ही है
तो फिर
स्मृतियों में क्यों नहीं कौंधते
सुगन्ध बिखेरते लाल गुलाब
सतरंगी किरणें बिखेरता
अरुण रंग क्षितिज
आकाश छूते चिनार
डोंगे से उठती
'हब्बा खातून' की पुकार

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

कश्मीर – II

वे भाग गए
या गए भगाए
कोई नहीं जानता

एक दोधारी तलवार
होता है सच
काटता
इधर भी
उधर भी

पुरानी कहावत है
छुरी खरबूजे पर गिरे
या
खरबूजा छुरी पर
कटता .... ?

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

कश्मीर – III

मैंने एक सपना देखा
मैं
घूम रहा हूँ
श्रीनगर की सड़कों पर
निर्द्वंद्व।

मैंने एक सपना देखा
श्रीनगर की सड़कों पर
अब नहीं
ली जाती हैं तलाशियां
आशंका में नहीं
धड़कते हैं दिल
अच्छा लगता है
मध्यरात्रि में
घूमना
बूलिवार्ड पर

मैंने एक सपना देखा
दुग्ध-धवल हो गया है
क्षीर भवानी का जल
लौट आई है
CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation
हब्बा कदल में चहल-पहल

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

अज़ान के साथ-साथ
सुनाई देने लगी है
घंटा-ध्वनि
'गणपतयार' की

मैंने एक सपना देखा
अरसे बाद लौटी है
घोड़े वालों के होंठों पर हंसी
उठ रही है
होटलों की रसोइयों से
पकवानों की महक
एक-दूसरे को देख
आतंकित नहीं होते हैं
सैनिक और असैनिक

कोई तो बताए
कब तक
मैं
देखता रहूंगा सपना
यूं ही......

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

विद्रोह

पैरों के नीचे दबा
कसमसाता रहा
रास्ता
उसे अधिकार नहीं था
बटोही चुनने का

हाथों के बीच
मसली जाती
कसमसाती रही तितली
उसने नहीं सीखा था
डसना

पत्थर पर लगातार
घिसते चले जाने से
ऊब गया चन्दन
बन गया आग

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

कब तक

आंगन में पेड़ था
पेड़ों पर फल
फलों को लगते थे पत्थर
पत्थर फेंकने वाले हाथों में
गिरते थे फल

गली में उठने वाला
तूफान
कुछ दूर चल कर
ठहर जाता था
पेड़ की चुप्पी से
पत्थर की चोट का रिश्ता
उसके भीतर
बूंद-बूंद रिसता
देर तक
तड़पाता था

ओ आंगन के पेड़
पेड़ के फल
फल पर गिरने वाले
पत्थर
गली में उठने वाले
तूफान -
कब तक
चुप्पी के गलत अर्थ लगाओगे
कहो
क्या कभी
छोटी-छोटी बेबसियों से
ऊपर भी उठ पाओगे ?

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

धृतराष्ट्र इतिहास

मित्रो

कब तक धृतराष्ट्र की भूमिका

निभाओगे

संजय की उक्तियों के

मनचाहे अर्थ लगाओगे

मित्रो

तुम्हारे इस पार

या उस पार

होने का अब

कोई अर्थ नहीं रह गया है

वह सीख गए हैं

तुम्हारी उपस्थिति को

अनुपस्थिति में बदलने की

कला

मित्रो

इस घटाटोप में

कहां से लाओगे उम्मीद

मसीहाओं की प्रतीक्षा करते

कहीं अपने कंधों पर उठाकर

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

अपना सलीब

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

चलना तो नहीं भूल जाओगे ?

मित्रो
कब तक
घर की सुरक्षा में कैद होकर
लोकतंत्र चलाओगे
तमाम गलत कार्यवाहियों पर
मौन सहमति की
मोहर लगाओगे
मित्रो
कब तक ज़िम्मेदारी से
मुंह मोड़कर
धृतराष्ट्र की भूमिका में
निर्वाण पाओगे

मित्रो
इतिहास के सवालों से
कभी तो टकराओगे
बोलो उस समय
भाग कर कहाँ जाओगे ?

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

सामना

मित्रो
इतिहास के पन्नों से
आँख चुराना
शुतुरमुर्ग हो जाना है।

मित्रो
टुकड़ों में बंटा
सच
भरमाता है
उसकी समग्रता में ही
वास्तविक आलोक
झिलमिलाता है

मित्रो
नींद में भी
पीछा करते हैं
दुष्कर्मों के प्रेत
आदर्शों के ध्वस्त हो जाने पर
सुख की नींद सोना
अभिशाप हो जाता है

मित्रो
नई सदी की दहलीज़ पर
खड़े होकर
सपनों के नये महल नहीं सजाओगे
CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation
तो कहो

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

मछली की आँख को
कैसे भेद पाओगे

मित्रो
पत्ते का डाल से टूटना
उसका मर जाना
संस्कारों का परास्त हो जाना
अपनी जड़ों से टूटना
कहो
जीने के लिए अवलम्ब
कहां से जुटाओगे

मित्रो
सुबह के भूले हो
रात हो रही है
लौट कर अब भी
घर नहीं जाओगे
तो कहो
शांति से जीने-मरने के लिए
कौन सा द्वार खटखटाओगे .....?

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

सपना – एक संवाद

उसने कहा
चलो एक सपना देखते हैं
मैंने व्यंग्य कसा
सपना भी क्या सायास देखा जाता है
और यदि देखा भी जाता है
तो क्या मिल कर देखा जाता है ?

उसने ठुमक कर कहा
हां, देखा जाता है
यदि अपने मन का देखना हो तो
फिर उसने तुनक कर पूछा
देश को स्वाधीन बनाने का सपना
क्या सबने मिलकर नहीं देखा था ?

चलो, हमने हार मान ली,
चलो, देखते हैं मिल कर एक सपना
तुम्हारा या मेरा नहीं
नितांत अपना –
लेकिन यह तो कहो
इस आपाधापी में
सपना देखने के लिए समय कहां से निकलेगा
कहां से जुटेगी सपना देखने की आदर्श सामग्री?

सामग्री यूं आसानी से जुटा पाती
तो सपना देखने की ज़रूरत ही किसे थी ?
सामग्री जुटाने में मैं सहायता करूं ?
बताओ सपने में क्या देखना चाहोगी ?
सपने में क्या देखा जाता है –
बुद्धू हो, इतना भी नहीं जानते ?

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

सपने में एक ऐसा अलौकिक जीवन देखते हैं
जिसे दूरदर्शन भी नहीं दिखा पाता
बादलों के बीच तैरता एक बंगला होता है
हवाओं में अपनी मस्ती से रास्ता बनाने वाली
गाड़ी होती है
सुख की एक भरीपूरी नदी होती है
जिसमें तैरते कभी कोई नहीं थकता
एक छोटी सी गृहस्थी होती है
किसी भी प्रकार के हस्तक्षेप से परे
उन्मुक्त, उद्दाम ....

ऐसा ही सपना हर कोई देखेगा तो कैसे चलेगा ?
यूं भी
इस सपने को देखते
न जाने कितनी पीढ़ियाँ नष्ट हो गई
और कुछ नहीं बदला -
तुम्हीं कहो
सिर्फ़ अपने बारे में सपना देखना भी कोई
सपना देखना होता है ?

मेरा अपना सपना है
तो जैसे मैं चाहूंगी वैसे ही तो देखूंगी
सपने में यह सब छोड़ क्या झोंपड़-पट्टी की
छुनिया बनूंगी
आतंकवाद की आग में जलते किसी मुहल्ले
की बलात्कारित युवती
या महिला आरक्षण बिल के न आने की
निरीह गवाह

क्यों बम्बइया फिल्म की कहानी सुना रही हो
तुम सपना देखते-देखते?

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

तुम भी अजीब हो
न ऐसे सपना देखने दोगे न वैसे
जाओ, हमें नहीं देखना तुम्हारे संग कोई भी सपना।

सपना नहीं देखोगी
तो ज़िन्दा कैसे रहोगी ?

सपना तो देखना ही होगा
एक बेहतर दुनिया
एक बेहतर समाज
एक बेहतर समझ के लिए

तो उसमें हम कहां होंगे ?

हम होंगे तभी तो समाज होगा
हम होंगे तभी तो सपना देखने वाली आँखें होंगी
हम होंगे तभी तो सपनों को साकार करने का हौंसला होगा
हम होंगे तभी तो दुनिया की तस्वीर बदल जायेगी
हम होंगे तभी तो एक नई सुबह मुस्कुरायेगी
और वह सुबह सिर्फ़ हम दोनों के घर को छू कर
लौट नहीं जायेगी

उसके होंठों पर सूरज जगमगा रहा था
मैं चांद की रोशनी में नहा रहा था
सपने की दुनिया में एक ख़ामोश इंकलाब आ रहा था।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

आतंक

हमीदे ने भी सुना है
'हिज़बुल' का युद्धबंदी का ऐलान
और वह निर्वाक है।

उसकी आंखों से
झांक रही है
उम्मीद की लाली -
अब उसके भी दिन फिरेंगे
अब दूभर न होगा
घर पर शांति से बैठना
काम पर जाना
होकर निश्चिन्त
कहीं भी
जो जी में आए
सो बोलना
जिस किसी रास्ते पर मन चाहे
दौड़ाना गाड़ी को
निर्द्वंद्व
और बच्चों का
निर्भीक होकर दौड़ना
सानन्द!
भीतर से डरा हुआ है
हमीदा -
शांति का सपना देखते
युद्धबंदी के ऐलान पर
टिप्पणी करने से कतराता है
कोई सुन लेगा
तो क्या होगा ?
यही सब सोच कर थर्राता है।

फिर भी
CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation
एक लम्बे अरसे बाद

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

उसे लगा
वह बतिया सकता है
बिना किसी ख़तरे के फौजी से
और उछालता है
फौजी को देखकर
एक दोस्ताना मुस्कुराहट
मगर अगले ही पल सहम जाता है
डर की पकड़ इतनी गहरी है
कि 'मुखबरी' का आरोप
कल्पना में भी उसके छक्के छुड़ा देता है।

कहां जाये
हमीदा ?
अपने ही वतन में रह कर
निर्वासित हो जाने का दर्द
अब उससे सहा नहीं जाता
टी. वी. पर आंखें जमाये
सुनहरे सपनों में खोया
हमीदा
बेबस सा छटपटाता है
सरहद पार से किया गया
ऐलान
युद्धबंदी की धज्जियां उड़ा रहा है

अपनी अंधेरी कोठरी में
लौट
मुंह छुपा लेता है
हमीदा –
कोसता है अपनी तकदीर को
मांगता है अल्लाह से दुआ
सबकी सद्बुद्धि के लिए
और आतंकित सा
CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation
चुपचाप सो जाता है......

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

उत्सवधर्मिता

ये दिन
बड़े गुलाम अली ख़ां के सुरों में
डूब जाने के हैं

ये दिन
बंसी की तान
तबले की थाप
या
संतूर के स्वरों द्वारा
सहलाये जाने के हैं

ये दिन
एक बार फिर
अपने भूले - बिसरे अतीत में
डुबकी लगाने के हैं

ये दिन
भारत की स्वाधीनता की
पचासवीं वर्षगांठ मनाने के हैं।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

संभावना

वह गली के मुहाने पर
खड़ा था
गली की जांच करता हुआ

यह गली
आगे चल कर बंद भी हो सकती थी

यह गली
कुछ दूर जाने के बाद
खुल सकती थी
किसी बाग या क़ब्रिस्तान में

यह गली
उसे ले जाकर खड़ा कर सकती थी
शैतान बच्चों की भीड़
या
हवाला के किसी कांड में

गली तो महज एक संभावना है

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

बौने की शर्त

तुम्हारी आंखों में
झांक कर
पुकारा मैंने
दृढ़ता से –
आकाश !

होठों को छुआ
वक्ष को सहलाया
ऊपर से नीचे तक
तैरता
चला गया हाथ

बौने ने जीत ली
शर्त
तीन कदमों की

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

बच्चा

बच्चे के हाथ
बुन रहे थे कालीन
बच्चे का सिर
ढो रहा था मैला
बच्चे की टाँगें
रौंद रही थीं मिट्टी
बच्चे का पूरा वजूद
घूम रहा था यहां से वहां
बच्चा अचानक
पहुंच गया था कहां से कहां
मगर जहां उसे होना चाहिए था
बच्चा नहीं था वहाँ

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

मुक्ति पर्व

डाल से टूटा
बयार के पंखों पर उड़ता
आनन्द मना रहा था
पत्ता
मुक्तिपर्व का

मुक्ति का ये क्षण
लघु नहीं
सनातन
अंग अंग में थिरकन
सिहरन
छूट छूट जाने की
बिछुड़ी हुई धरती का
स्पर्श
पुनः पुनः पाने की

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

शांति

डूबते सूरज की किरणों के साथ
उड़ता है वनपाखी
एकाकी

वनपाखी बदहवास है
पता नहीं क्या देखकर लौटा है वह
और किस दुर्घटना की आशंका से आशंकित
कांप रहा है लगातार

शांति के लिए सन्धि-वार्ताएं करता
थक चला है वनपाखी
हर समझौता अंततः
एक छलावा बन कर डँसता है
धरती के ओर-छोर लहराती रहती है
हिंसा की फ़सल
शांति कि लिए पदयात्रा करने को
तत्पर
जानता है वनपाखी
कि
शांति अखबार की एक ख़बर मात्र नहीं है
जिसे पढ़कर
दुनिया के बदलने का भ्रम जागता है
और पड़ोसी के मुर्गे से
अपनी बिल्ली की लड़ाई
सुख देने लगती है

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

तलाश

पहाड़ ने
बादल से मांगी बर्फ़
मैदानों ने वर्षा
बादल ने दोनों का
मान रख लिया

नाले ने बर्फ़ से
मनुहार की
पानी पाया
नदी में खो गया

नदी
समोती चली अपने भीतर
वर्षा और बर्फ़
शहर का मैल
यह..... यह
और वह
लकड़ी -
तैरती रही उसकी छाती पर नाव

सागर
नदी की प्रतीक्षा करता
लपकता रहा बाहें फैलाये
धरती की ओर

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

नदी
सागर में खो गई –
नौका
जहाज़ बन गई

सूरज की गर्मी से बौखलाया
सागर
करबद्ध करता रहा मनुहार
भाप को पुकारते रहे बादल
बादल को पहाड़
पहाड़ को बर्फ़
हरियाली
रेत !

एक दूसरे को पाने के लिए
कितने रूप धरते हैं
सागर और भाप
कहां कहां की यात्रा करते हैं
बेमाप
उन्हें नहीं लगता अच्छा
निरन्तर
मिलन या बिछोह

आंख-मिचौनी कुछ तो हो
कि जीवन का
अर्थ खुले

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

शीतकाल में घाटी

घाटी
सोई हुई है
ठंड से दुबकी
बर्फ़ का लिहाफ़ ओढ़े
कांगड़ी की गर्मी को
बूंद बूंद पीती
सपनों की नगरी में
खोई हुई है
घाटी सोई हुई है

घाटी जाग रही है
जमे हुए दर्पण में
चेहरे को देख देख
कांप रही है
सड़कों की चूनर का
दूधिया किनारा
हाथों से क्यों कर छूटेगा
यही सब सोचती
हांफ रही है
घाटी जाग रही है

घाटी नहा रही है
धूप का दामन थामे
महीनों लम्बी सड़क पर
वसंत के गीत
गुनगुना रही है
घाटी नहा रही है

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

परिवर्तन

सहमी हुई हवा
रुक रुक कर कदम रखती
एक घर से दूसरे घर की दूरी
नाप रही है

शहर वही
वही गलियाँ, वही बाजार
वही हवा का फूल - पौधों के साथ प्यार
मगर
कितना कुछ बदल गया है अचानक
अनचाहे

हवा
डरी हुई है आदमी से
आदमी झरोखे से झांकता है
आकाश
अभी अभी छोड़े गए
रॉकेट के धुएं की विषैली ताजा लकीर
किन हवाओं में गुम हो गई है।

बात करता हुआ आदमी
अचानक
एक खबर में तब्दील हो जाता है
कौन कह सकता है कि खबर
आदमी के लिए बनी है
आदमी खबर के लिए नहीं

हवा निर्दोष है
निर्गन्ध, निराकार
मगर इसका क्या किया जाये
कि उसे फूलों से प्यार है
और फूल .....?

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

यात्रा

यात्रा का अन्तिम पड़ाव
निढाल थकन
अन्तहीन उदासी

चलने और पहुंचने के बीच
छाया रहा उत्साह
एक अनदेखे सत्य की पहचान
एक अनटूटे स्वप्न से साक्षात्कार की चाह
बूंद बूंद बहता रहा प्रवाह

नाले से नदी
नदी से सागर
सागर से ....

जो आगे है
वही क्या पीछे
एक गोल के परे दूसरा गोल
एक खोल के भीतर दूसरा खोल

पहुंचना नहीं होता कभी
कहीं भी –
पहुंचना माने चलना
चलना माने पहुंचना
एक ही सत्य है
यहां से वहां

कहीं भी खत्म
कोई यात्रा
नहीं होती

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

दरवाज़े

दरवाज़े पर खड़ा आदमी
होता है
एक प्रश्न
एक संभावना
या सिर्फ़
एक याचना

दरवाज़े
हमेशा नहीं खुलते
भीतर की ओर

दरवाज़े
यूं ही नहीं दे देते
किसी को भी
ठौर

दरवाज़े
घूमते रहते हैं
दरवाज़े पर
घूमने वालों के
साथ - साथ

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

बीजप्रश्न

कब तक
टूटन को सहेजता
दुबक कर सोया रहेगा
पहाड़

कब तक
उफ़नती नदी को
रोक कर रख सकेगा
बांध

कब तक
अलस्सुबह
शहर में पहला कदम रखने वाले
आगंतुक को
राजा बनाने की सज़ा
भुगतेगा
प्रजातंत्र

कब तक ?

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

साहस

शहर में भोंपू का बहुत शोर है
अपने मुंह मियां मिट्ठू बना
हर कोई चोर है

मंच पर भाषण देता है नेता
दरी उठाने वाला
उससे बहुत अधिक समझदार
किंतु कमज़ोर है

उसे समझाता है
छुटभैया
होश कर भाया
और कुछ नहीं तो नेता के पांव के नीचे से
दरी ही खींच कर बता
तेरे हाथों में कितना ज़ोर है

शोर तो बस शोर है

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

विकल्प

चिड़िया
घोंसला बनाती है
अंडे सेती है
बच्चे बड़े हो जाने पर
फुर्र से उड़ जाती है

चिड़िया का सामना
शाहीन से होता है या सांप से
या जिस किसी से
वह चीं चीं करती चिल्लाती है
किंतु घोंसले से दूर
जा नहीं पाती

चिड़िया डरती नहीं
चिड़िया से
कुनमुनायेगी
झगड़ेगी, पंख फड़फड़ायेगी
फिर अपना समझ कर
गले लग जायेगी

चिड़िया सुखी है
CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation
उसके पास वह सोच नहीं है

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

जो आदमी को
आदमी की आंखों में
छोटा कर जाती है
धरती से उखड़े
गाछ को
पूरे परिवेश से
बेगाना बना देती है

गाछ
लौटे तो लजाता है
दूर चले जाने पर
भूलता - भुलाता है

गाछ की टहनी पर बैठी चिड़िया
सोचती है
गाछ उससे सीख क्यों नहीं लेता
वह हर बार
आदमी ही क्यों होना चाहता है

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

बादल जंगल

क्षितिज के पार
उगा है
बादलों का जंगल
इन्द्रधनुषी।

बादल बहुरूपिया तो नहीं
कि बदले रूप निरन्तर
मगर
आकार पर आकार बदलता
किस पेड़ का प्रतिबिम्ब होना चाहता है

बादलों की गड़गड़ाहट
कम्पाती है धरती का सीना
और
बादलों के जंगल में छिपा
बिजली का चीता
झपटता है
अचानक
धरती झुलसती है
पर बांझ नहीं होती

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

बादल
चाहता है सिर्फ़
अपने जंगल में मस्ती
जहां
वह मनमाने आकार गढ़ सके
धरती की मनुहार को
अपने सिंचन से सहलाकर
उसे आकंठ रससिक्त कर दे
और पेड़
खिलें, फूलें और फलें।
कुछ गलत चाहता है क्या बादल ?

जंगल से जंगल का रिश्ता
बेमानी या बेजा तो नहीं हो सकता।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

चुप्पी

उसने पूछा है
मुझसे मेरा हाल
और मैं चुप हूं

चुप हूं कि मुझे
अपने से अधिक
दु:खी बना देता है
उनका हाल
जो न इधर हैं
न उधर
और झेलते चले जाते हैं
तकलीफें चुपचाप

चुप हूं
कि जानता हूं
बोलने का अर्थ होता है
शक के घेरे में आना
शपथ उठा कर सच बोलना
फिर भी झूठ से हार जाना

चुप हूं
लेकिन निष्क्रिय नहीं हूं

मुझे पता है
सबको रौंदता चला जाता है
इतिहास का रथ
एक दिन सबका सितारा
पलट जाता है
बीता हुआ कल
कभी लौट कर नहीं आता

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

मुझे प्रतीक्षा है
उस दिन की
जब मेरे बोए हुए बीज
छतनार वृक्षों में बदल जायेंगे

जागेंगे
सोए हुए लोग
करवट बदल कर
उठ खड़े होंगे
अन्याय के मुंह पर चपत लगाते
भेड़-बकरियों की तिलिस्मी योनी का
तिलिस्म तोड़ते
एक दिन
पराक्रमी बन जायेंगे

उस दिन
जब वह पूछेगा
मुझसे मेरा हाल
तो मुझे चुप नहीं पायेगा
मेरी आंखों में उसे
क्रांति का स्वर्णिम आलोक
दीख जायेगा

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

यात्रा का गणित

यात्रा में होना
किसी को पाना
किसी को खोना

यात्रा में था
दाता
गर्वित, मदमाता
बाहरी विनय के भीतर
लिपटा था
दाता होने का दंभ

दाता को प्रिय लगता था
याचक का गिड़गिड़ाना
असीसना
दाता के पांवों में
बिछ-बिछ जाना
इससे उसे दाता होने का मज़ा आता था
अन्यथा याचक के जीने-मरने से
उसका क्या नाता था

यात्रा में था

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

याचक

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

याचना के मद में चूर
विनय से कोसों दूर

याचक
दाता के गर्व को पहचानता था
किंतु उसके अपने भीतर कहां क्या पल रहा है
बस यही नहीं जानता था

पुण्य का लेना-देना
अहं को सहलाने का खेला है
यात्रा में जीवन
एक-दूसरे के संग जुड़ कर भी
अकेला है

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

मदारी – I

मदारी
जानता है
कि जनता को मनोरंजन
और उसे
पैसा दरकार है।

जनता तो बेचारी है
मनोरंजनी भूख की मारी है
एक जगह भीड़ बन कर
आकाश देखने या
नदी में झांकने से बिरत
मदारी का तमाशा देखे
यही उसकी लाचारी है

मदारी
जनता को सपने दिखलाता है
पति को पत्नी से लड़ाता
मनाता है
ऐसे में भीड़ को अजाने ही
अपना छूटा हुआ घर
याद आता है
और वह चल देती है
अंधेरे बंद कमरों की ओर ।

मदारी जानता है
इस तमाशे से भला नहीं होता
किसी का भी
मगर वह
अपने परिवार को
कहां छोड़ आये कि
जनता को मनोरंजन
और उसे
पैसे की दरकार न रहे

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

मदारी – II

मदारी आजकल
जंगल नहीं जाता है

कुछ भी हो
शेर
आज भी जंगल का राजा है
भैंस उसी की सुनती है
जिसके पास लाठी है
बिना बाहुबल के
जंगल में
भरी नदी भी प्यासी है

मदारी को यह सब
अब
फूटी आँख नहीं भाता है
मदारी आजकल
जंगल नहीं जाता है।

जंगल में आज भी
हिरण, तोते, हाथी है
चालाक खरगोश चलते

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

ठोंक पर छाती हैं
कछुए की चाल
वही सदियों पुरानी है
अदरक का स्वाद
बंदर समझ नहीं पाता है
मदारी आजकल
जंगल नहीं जाता है

मदारी तो मदारी है
शिकार है, शिकारी है
नियमों की नगरी में
भीड़भाड़ भारी है
जंगल में मदारी का
गणित गड़बड़ाता है
आगे नहीं बढ़ता
कि पीछे लौट आता है

मदारी को आजकल
शहर में ही जंगल नज़र आता है

वह इन दिनों
जंगल नहीं जाता है

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

अचानक नहीं

अचानक नहीं घटता
जीवन में कुछ भी
घट जाता है बहुत कुछ
अनचाहे
चाहे

अचानक नहीं उमड़ते हैं
बादल
अचानक नहीं आती उफ़ान पर
नदी
अचानक नहीं सौंप देते हैं हम
अपने आपको

अचानक नहीं टूटने लगता
एक भरा-पूरा देश
अचानक नहीं हो जाती
क्रांति
अचानक नहीं गूंजती उमंग
परिवर्तन की

युगों से संचित साधना
उद्घोष करती है हमारे भीतर
गहरे
जब हम अपने से छिटक कर
दूर खड़े होते हैं
सदा सदा के लिए।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

हताहत अस्मिता

घात - प्रतिघात करते
टकराते
चूर-चूर होते
थकते नहीं हम
एक दूसरे को खिझाते

एक ठंडा
सायादार पेड़ हो सकती थी
मां
बहती हुई नदी
बीवी
उन्मुक्त पक्षियों में बदल सकते थे
बच्चे
यदि एक दूसरे को झेल पाते हम

लुकाछिपी के खेल में
हताहत है
अस्मिता।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

बंद मुट्ठियों के आर पार

सूरज के साथ साथ
दरवाज़े से निकलते हैं बाहर
पैर
खिड़की से हाथ
और
लगता है सारी धरती
सिमट रही है
सिर्फ़
एक मुट्ठी में

सूरज के साथ साथ
उठता है कोलाहल
खेतों के रास्ते उतरता है
धूल का तूफान
चिमनियों से फैलता है
आकाश पर
धुआं
और सारी सृष्टि
उलझ जाती है
एक मृग-मरीचिका में

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

सूरज के साथ साथ
पूरी होने लगती है
एक यात्रा
कंधों पर सवार
ढलता है दिन
पसर जाता है सन्नाटा
भीतर, बाहर

एक गुदड़ी का लाल है सूरज
जो धीरे धीरे पानी में डूब रहा है
अगणित उमंगों और आशाओं को
समेटे
अपने भीतर
अनायास
बंद मुट्ठियों के आर पार।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

भूख

दाएं हाथ जलता था
चूल्हा
उसको जलाता हुआ

चूल्हे का गणित
सिर्फ़ जलने तक नहीं
सीमित
कौन नहीं जानता

चूल्हे की आंच पर
पक रही थी
भूख
मदहोश करती हुई

चूल्हे से चूल्हे की
जले कभी आग
काश !
हो जाए कभी ऐसा भी

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

मुक्ति का अर्थ

बन्धन
बान्धता है
जोड़ता है
मुक्ति का द्वार
खोलता है

मुक्ति
मुक्त करती है

तोड़ती है
फिर फिर टूटी हुई चीज़ों से
जोड़ती है

खुलापन
दृष्टि को देता है
विस्तार

ले जाता है
अपने से बाहर
अनन्त यात्रा पर
खुलता है जीवन का
अर्थ

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

सुनहरा भविष्य

रात के अंधेरे को भेदती
एक चीख़
दिन के उजाले को अपनी धार से तार तार करता
एक खुला हुआ चाकू
पौ फटने पर कानों को भेदती सनसनाहट
ग्रेनेड और रॉकेट की
रात के सपनों में धू-धू कर जलते
पीछे छूट गए
मकान

एक नन्हे फूल पर
अठखेलियां करते
दुबक गई है
एक नन्ही सी तितली

किसमें साहस है देखे
सपने
सुनहले भविष्य के

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

लड़कियां

लड़कियां
मां-बाप के लिए रातों की नींद होती हैं
लड़कों के लिए
एक गुलाब
एक जलती झाड़ी या
एक तेज़ कुल्हाड़ी

लड़कियां
एक उम्मीद होती हैं समाज के लिए
पति के लिए
एक सपना
एक घर
एक भरा-पूरा जीवन

आखिर क्या होती हैं
लड़कियां
लड़कियों के लिए ?

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

अनुत्तरित प्रश्न

खुशी खरीदने के लिए
कहां जाना होगा मुझे -
हाथों में नोट सम्भाले
पूछ रही थी नन्ही बच्ची

फिल्मी गाने की ताल पर
देह मटकाती
पूछ रही थी नवयौवना -
जहां खरा प्यार मिलता है
कहां है
वह हाट-बाज़ार ?

ईश्वर के आगे
धूप-दीप जलाकर
बंद आंखों पूछती है ईश्वर से
बुढ़िया एक
कब मिलेगा मोक्ष
कब गोद खिलाऊंगी
पोता

तुम्हारे अनुत्तरित प्रश्न
यूं ही रह जायेंगे
तथाकथित ईश्वर की बनाई इस दुनिया में
प्राण
जैसे आए थे
वैसे ही अनछुए
लौट जायेंगे

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

आशा

कोमल स्पर्श की भाषा
कब समझोगे तुम ?

एक सुख है
जो खेलता है आंख मिचौनी

एक दुःख है
जो अवांछित ऋतु सा टिका हुआ है
पलकों पर

एक आस है
जो बंधी हुई है
मंझधार में डोलती
नाव पर

एक विश्वास है
जो गिर गिर कर
उठता, चलता जाता है
सघन वनैली घास पर

ओ आशा की रूपहली किरण एक
तुझे शत शत प्रणाम
दुनिया जिन चीज़ों से तोड़ती है
तू मुझे
उन सबसे
फिर फिर जोड़ती है

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

छल

दो शरीरों के बीचोंबीच
पसरी पड़ी थी
एक सूखी नदी
अवसाद की।

विपरीत दिशाओं में
अग्रसर थे मन
जैसे
एक साथ खिल आई हो धूप
बरस रही हो फुहार -
बरसात में

और किसे कहते हैं
छल ?

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

गांठ

गांठ में बंधी बात को
हवा में लहराता हूँ
आने-जाने वालों को पुकारता
बुलाता हूँ
बात बहुत कीमती है
बोलेगी
तो सौ-सौ भेद खोलेगी

हवा
यहां से वहां चक्कर लगाती है
हंसी
होठों में फंसी कसमसाती है
और
भीड़ अपने में ही डूबी
रोज़गार के फंदे सुलझाती
आगे बढ़ जाती है।

मैं
एक बार फिर हांक लगाता हूं -
यह बात मैं बहुत दूर से लाया हूं
देश का दर्द जागा है
इसीलिए बता रहा हूं
अन्यथा ऐसा तो नहीं
कि मुझे इसकी कीमत नहीं मिल सकती -
कहीं भी

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation
अंततः

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

बात बताने को तत्पर
मुंह खोल रहा हूं
किंतु आश्चर्य
जनता के कान बंद हैं
किंतु मेरी अबोली बात का
एक एक शब्द
उसकी सांसों में गूंज रहा है

ठगा सा मैं
हतप्रभ रह जाता हूं
गांठ पारदर्शी तो नहीं
अपने को विश्वास दिलाता हूं

गांठ खोलने को हाथ आगे बढ़ाता हूं
बात
यहां से वहां
जाने पहुंच गई है कहां से कहां
आप बात को वापिस बुला सकते हों
तो बताइये
अन्यथा उठिये
अपने घर जाकर
गुत्थी सुलझाइये

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

सपना तुम

जो है
जो होना चाहिए
किसे चुनें हम
जानती हो तुम ?

होने को हो सकती थी
एक सेज फूलों से सजी
खिली चांदनी सी रात
ओस भीगी सुबह
लेकिन
इसका क्या भरोसा
कि तुम भी वहां होतीं
मेरी बाहों में
ऐसे ही
जैसे इस क्षण
टूट कर प्यार करते हुए !

सपने अच्छे लगते हैं
मुझे
पर तुम
CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation
उनसे कहीं ज़्यादा ज़रूरी लगती हो ।

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

अनबूझ

संबंधों की रपटन/फिसलन
छंदों का सन्नाटा
जोगी फिरता चहुं दिशा में
सांप का जैसे काटा

अब धरती पर बेला फूली
पीले हुए कनेर
अब सावन ने वर्षों बाद
इधर का चक्कर काटा

रात बैंजनी अलस दोपहरी
घर घर में सन्नाटा
एक गांव है किंतु घर घर
कैसे गया है बांटा

एक टांग पर खड़ा है जोगी
मन्दिर-मस्जिद बीच
इधर राम और उधर खुदा है
किससे तोड़े नाता

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

डर

फलने-फूलने दो
बीज को
छतनार होने दो
पेड़
पतझड़ का स्वागत
झेल नहीं पायेगा
लदी बाहों का मौसम

भरने के लिए रीतना
रीतने के लिए भरना -

रिक्त स्थान पर
अठखेलियां करती रही
धूप-किरण
निगल गया अंधकार
एक टुकड़ा बचा हुआ
प्रकाश !

रंगों को समेटे हुए
पसरा रहा अंधकार
रोशनी की आतुर प्रतीक्षा में

पहाड़ की चोटी से उतरी
रूपहली किरण एक
जंगल, बस्ती, खेत, खलिहान
जगमगाया

घर की अंधेरी कोठरी ने
बहुत बुलाया
सूरज ने बरजा
प्रकाश का मन कुम्हलाया -
अंधेरे से क्या डरने लगा सूरज ?

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

लोहड़ी

लोहड़ी की सुबह
तवी के पार
पहाड़ियों से उगा सूरज
उत्सुक था
ढोल की थाप पर थिरकने को
नाचने को 'डंडारस'
नचाने को 'छज्जा'

वह जाना चाहता था
उन सभी घरों में
जहां जन्में थे बालक
आई थीं नई-नवेली दुल्हनें
हुए थे नेगाचार
उमग रहा था त्यौहार

उसे आशा थी
मिलेंगे सस्सी-पुन्नू
नाचेंगे हिरण
लोहड़ी मांगते मिलेंगे
बच्चों के झुंड
शाम तक उत्सव गरमायेगा
उसके घर लौटते ही
लोहड़ी का अलाव जल जायेगा

समूहों में बंटने लगेंगे
प्रसाद
बधाइयां

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

आग की तपिश को सहेजते
भूल जायेंगे लोग -
उनकी प्रतीक्षा में
आकुल हैं रजाइयां

मगर
उसकी आशाओं पर फिर गया पानी
न कहीं दिखा छज्जा
न सस्सी-पुन्नू की वाणी

अपने-अपने आंगन में
जला कर आग
सांझ ढल जाने पर
मना रहे थे लोग
लोहड़ी का त्यौहार

आग की ऊष्मा में
तन गर्मा रहे थे
मन के समुद्र
रेगिस्तानों में परिवर्तित
होते जा रहे थे

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

दशमेश को नमन

मित्रो
इस घटाटोप में
बचने के उपाय ढूंढते
चूहों के बिल तलाशने से
क्या होगा ?

मित्रो
तमाम विपरीतों के विरुद्ध
खड़े होना
सिंह होना है

मित्रो
शांति चाहने की
पहली शर्त है
अनवरत् युद्ध की तैयारी
बलिदान को प्रस्तुत
अपने ही खड्ग पर
अपने मुंड की सवारी

मित्रो
तीन दिनों में नहीं रचा गया

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

तीन सौ बरसों का इतिहास
करुणा बरसाते हाथों से
तलवार चलाते हाथों तक की यात्रा
न अकारण थी
न व्यर्थ
केवल पांच प्यारे ही
इस तथ्य को जानने में
निकले थे समर्थ

देश और धर्म की
रक्षा को सन्नद्ध
चिड़ियों संग बाज लड़ाने वाले
सूरमाओं को मेरा सलाम
ग्रंथ को गुरू मानने वाली
मनीषा को
मेरा शत् शत् प्रणाम।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

रहस्योद्‌घाटन

यत्न से सहेजे
रहस्य को खोला तुमने
अचानक
आत्मा का कोकिलकंठी स्वर
चहचहाया
थोड़ी देर बाद
न जाने क्या हुआ
सोच को
पोर-पोर पसीना चुहचुहा आया

अपनी स्वीकारोक्ति की महिमा से मंडित
खड़ी हो तुम भीड़ में
दैदीप्यमान
परिणाम की चिन्ता से परे
मुक्त
दृढ़
और नतमस्तक - मैं !

सहज नहीं होता
खड़ी फ़सल को काटना
चाहे
कटने के लिए ही बोई गई थी वह

सूने खेतों की मेंढ़ पर
फिर खिलेंगे फूल

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

मेरे और तुम्हारे स्पर्श को लालायित
उग आयेंगे अमलतास
धरती
बैल के इकलौते सींग पर टिकी
बच जायेगी
ऊभचूभ होने से।

अपने से भिन्न किया तुमने
एक रहस्य
ज्यों कोख से जन्मा हो कोई एक शिशु
अबोध
धरती पर फिर लहराई
विश्वास की फ़सल
बहुत पीछे छूट गया
यात्रा का अंतिम पड़ाव

रहस्य में बंधे हम तुम
बस रहे हैं
एक दूसरे की आंखों में

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

गड़बड़ गणित

खिड़की के
कांच से टकराया
एक पत्थर
सारा शहर
लहूलुहान हो गया

स्कूलों से लौटते बच्चे
दफ्तर में अखबार बांचते बाबू
धंधे से थके दुकानदार
चौंक कर भागे --
विएतनाम से अधिक भयावह हो गया
अचानक
एक वयस्त शहर !

अपने अपने घरों में
दुबके
प्रतीक्षारत हैं सभी
अमन-मार्च के लिए
यह अलग बात है कि
शहर में
अब वैसे भी अमन है
और दिलों में बेचैनी,
एक दूसरे को ढारस बंधाते
डरे हुए हैं लोग--
तीन लाख पर केवल तीस का ज़ोर
गणित का अनबूझा सवाल हो गया है
एक पूरा शहर
रातोंरात
कंगाल हो गया है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

मर्यादा

सागर के किनारे
खड़े हो कर देखो
फ़ेनिल झाग में लिपटी
धरती
एक बंधी हुई पुड़िया सी
लुभायेगी।

सागर का अनंत विस्तार
धरती के बौने होने का एहसास जगायेगा
और धरती
अपने फैलाव से नहीं
आदमी के स्वार्थ से पहचानी जायेगी

धरती पर
जिस देव ऋषि ने रचे थे
मंगल गान
जंगल के बीचों बीच स्थित आश्रम में
मैं
उसे फिर बुलाना चाहता हूं
शायद
उसके साथ जंगल फिर लौट आएं
सूनी होने से बच सके धरती की कोख
और
बंधी रहे
सागर की मर्यादा

उसके तट पर फैली
बालू का विस्तार
पहाड़ों से भयभीत होकर
रुका रहे
सागर के आस पास।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

अनास्था

सदा सच बोलो
कहा गांधी ने
अहिंसा परमो धर्मः
बोले बुद्ध
प्रेम गली अति सांकरी
गली गली गुहार लगा रहा था कबीर।

मैं कोतवाली पहुंचा
चौराहे पर लड़कियों से छेड़छाड़ करते
रेहड़ी वाले से हफ्ता वसूलते
गुंडे के संग रंगरलियां मनाते सिपाही की
शिकायत की

कोतवाल ने मुझे सादर बिठाया
और फिर मैं अदालत की कृपा से घर लौट पाया।

मेरा मोहल्ला अचानक
कुरुक्षेत्र का मैदान हो गया था
फौजी डीपो से चोरी बारूद की आतिशबाज़ी
दीपावली का दृश्य प्रस्तुत कर रही थी
और सारी बस्ती तमाशबीन बनी टी.वी. कैमरे को
नीहार रही थी।

मैंने बुद्ध की प्रतिमा के सामने
सिर को नवाया
बुद्धम् शरणम् गच्छामी
अहिंसा परमो धर्मः को दुहराया
और दोनों सेनाओं के बीचोंबीच शांति का बिगुल
बजाने लगा।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

दोनों दलों को शांति का संदेश
एक आंख नहीं भाया था
अस्पताल के वार्ड नं. एक को मैंने अपने घर जैसा तो नहीं पाया था
किंतु 12 नम्बर की टूटी खटिया मुझे सम्भाले
चरमरा रही थी
अस्पताल सदियों पुराना है
कुछ ऐसे ही गीत गुनगुना रही थी।

मैं नर्स के चेहरे पर तलाश रहा था
ममता
डॉक्टर की आंखों में प्यार
किंतु सब बेकार
प्रेम गली में नहीं खुलता था
यहां कोई भी द्वार।

मैं लौटा
किताबों को उठाया
शेल्फ में सजाया
और केबल टी.वी. का स्विच खोल दिया

जीवन का सौंदर्य मुझे लालायित कर रहा था
मैं सारे आदर्शों को
शेल्फ में सजा कर चैन की नींद सोने की तैयारी कर रहा था।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

आह्वान

सोचा तो यही गया था
मढ़ दिए जायेंगे हीरों से
सोने की चिड़िया के पंख
तोड़ देगा कूल-किनारे
नदियों में बहता दूध
खेतों में सदा लहरायेगी
हरियाली
पहाड़ों पर झूमते पेड़ों का
और अधिक चौड़ा हो जायेगा सीना
जीवन में घुल जायेगी
सादगी
शब्दकोश से निकाल बाहर किए जायेंगे
अर्थ खोए शब्द--
भूख, गरीबी, अकाल।

सोचा तो यही गया था
अब नहीं उछाली जायेगी
किसी की भी पगाड़ी
कसी नहीं जायेंगी मुश्कें
लुटेंगे नहीं खलिहान
मूंछों पर चिपकी मलाई से
धोखा नहीं खायेगा
राजा
स्वतंत्रता ठीक वैसे ही
मिलेगी
जैसे हवा
जैसे पानी
जैसे आकाश
जैसे पक्षियों की वाणी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation

सोचा तो यही गया था

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

नन्हें चेहरों पर लहरायेगी
खिले गुलाबों की फसल
जलेंगे नहीं भट्ठी के ताप से
कोमल नन्हें हाथ
अब, पत्थर नहीं कूटेगी कोई भी अबला
इलाहाबाद के पथ पर
राजपथ और जनपथ
काटेंगे नहीं एक-दूसरे को
अब कोई नहीं बुड़बुड़ायेगा लगातार
टोबा टेक सिंह
अब किसी को मारी नहीं जायेगी गोली
गाते हुए राम-धुन

सोचने ही सोचने में बीत गये
पूरे पचास वर्ष

ऐसा तो नहीं कि खड़े हैं हम
वहीं कि वहीं

पहाड़ों की चोटियों से उतरती
धूप
सहला जाती है
कभी कभी घाटियां
फूल बिखेरते हैं रंग
और सुवास
इठलाती हैं तितलियां
एक बेहतर कल के लिए
गुहार लगाती हैं अमराइयां
थोड़ी सी कोशिश
जीवन में भर दे बहार

ओ मेरे देश
क्या तुम सुन रहे हो।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

एक सपना फसल

खेतों में लहराती
फसल
एक सपना होती है
सींचती है
आँखों को
मन को

मौसम और फसल का रिश्ता
नहीं बदलता
अगरचे
मौसम नादान
बदलता रहता है
लगातार

जवान
लड़की हो या फसल
सबको ललचाती है
दोनों धरती के सूनेपन को
अपने होने से
भर देते हैं
और
खतरा
दोनों पर झूलता है
बराबर

सपने की रक्षा करो
ऊँचा सपना
ऊपर उठाता है
आदमी की आँखों में
जीवन जगाता है

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

सपने को सहलाओ
फसल
खिल खिल जाती है
टूटे हुए मन में वह
ठहर नहीं पाती है

फसल
जी तोड़ मेहनत को देख
मुस्काती, इठलाती है
एक सपने से
यथार्थ हो जाती है

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

उदास सुबह

रात भर
जागते रहे हम
एक-दूसरे की आँखों में

चौकीदार की पुकार
कुत्तों की चिल्लाहट
घड़ी की टिक-टिक
हमारे सिरों के ऊपर से
निकलता रहा

सब कुछ
अनछुआ

रात भर
जागते रहे हम
एक ही टेक दोहराते हुए
जहाँ भिड़ सकें हम अपने आप से
वह पड़ाव
अभी बहुत दूर है

रात भर
पास लाने की कोशिश में रत
क्षरते रहे हम
जिस अहसास को
हमारी पकड़ से दूर
मुँह चिढ़ाता रहा हमारे विश्वास का-
रात भर!

सुबह
उदास क्यों जागे थे
हम?

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

संकल्प

मुर्गी को अच्छा लगता था
मुर्गे से छेड़छाड करना
उसे बहलाना, फुसलाना
झुठलाना
और अपने लिए कठिन से कठिनतर
काम बताते चले जाना

मुर्गी को अच्छा लगता था
घूरे पर टहलना
यहाँ से वहाँ उड़ान भरना
लड़ना-झगड़ना
रूठना-मनाना

मुर्गी को अच्छा लगता था
बच्चों के बीचोंबीच बैठकर
लोकगीत की तान उठाना
कहानी कहना
जिन्दगी के दांव-पेच सिखलाना
चोंच और पंजों को भरपूर
प्रयोग में लाना

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

मुर्गी को अच्छा लगता था
सपने देखना
सपने में राजकुमार को बुलाना
उसकी कलगी को चूमना, सहलाना
वादे करना और
भूल जाना

मुर्गी को नहीं सुहाता था
कसाई का रोज रोज आना
बिरादरी में हड़बड़ाहट का फैलना
आतंकित चूज़ों का
दम साधकर दड़बों में सटक जाना

मुर्गी इन दिनों
छाती में भर रही थी साहस
चोंच में धार
आंखों में अंगार

बस्ती में उदय हो रहा था
एक नया सूरज

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

अभयतंत्र

मित्रो
शहर की सड़कों पर
कब तक
शब्दों को नंगा घुमाऊंगा

मित्रो
भारत की महानता के
आख्यानों से
कब तक जी बहलाऊंगा

मित्रो
लोकतंत्र का तमगा
छाती पर सजाए
अयोध्या और गोधरा में
कब तक मानवता को
नंगा नाच नचाऊंगा

मित्रो
कब तक राष्ट्रीय एकता को
हाथी के दांत की मानिंद
वक्तव्यों में भुनाऊंगा

मित्रो
अब कठिन हो चला है
नन्ही चीखों से ध्यान हटाना
सच को पर्दों में छिपाना

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

कालबोध

यह किस समय में रह रहे हैं
हम?

आदमी को काट कर फेंक दो
या
आदमी को चढ़ा दो
चाँद पर
सड़क पर रेंगते रहते हैं
केंचुए अविराम।

कोई एक हाथ
फेंकता है ठहरे पानी में
पत्थर
छींटे हहरा कर उठते हैं
बैठ जाते हैं–
चौंकते हैं लोग ज़रा सा
और फिर
गहरी नींद में
सो जाते हैं

यह शताब्दी
संवेदनशून्यता की शताब्दी है
पीछे छोड़ आए हैं हम
दोगलापन
अब यहाँ चमत्कार के लिए बच रही है
केवल राख
छाती ठोंक कर झूठ बोलने का नाम है
कला
इस नक्कारखाने में
कुछ पाने के लिए अपेक्षित है

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

ज़ोर-ज़ोर से फाड़ा जाए गला!

यह किस समय में जी रहे हैं
हम?

अपनी बोली लगवाने को प्रस्तुत हैं
बाज़ार में एक साथ
बौद्धिक और वेश्या
ग्राहक के लिए कठिन हो चला है
दोनों में फ़र्क करना
दोनों को अपेक्षित है
वैभव में जीना
अभिजात्य के दर्प का पेट भरना

यह किस समय में रह रहे हैं
हम?

हिम्मत को
बैंक के लॉकर में बंद करके
देते हैं मूँछों पर ताव
खाते हैं चुगली
खेलते हैं दाँव
हमारा ही समय हम पर हंसता है
न आने वाला कल
कई कई रूपों में डंसता है

यह किस समय में जी रहे हैं
हम?

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

काल बोध इस अर्थ में भी काल का बोधपरक प्रतीक है क्योंकि वह कालातीत की ओर नहीं मुड़ता बल्कि काल के सभी पक्षों को सामने लाकर स्पष्ट करता है कि काल का सर्वकालिक विचरण वर्तुलाकार है अर्थात् वह सदैव मुख्य बिन्दु के बहुत निकट है।

कालबोध की कविताएं अपनी निष्पाप छवि के कारण कविता की दुनिया की देहरी पर नई दस्तक हैं। और इस नई दस्तक की अनुगूंज सभी ओर महसूस की जा सकती है।

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

कविता और कालजगत के जाने-माने नाम रमेश मेहता का जन्म जम्मू में 9 नवम्बर, 1947 को हुआ। वहीं उन्होंने शिक्षा प्राप्त की; वहीं उनकी कविता परवान चढ़ी।

डोगरी-भाषी होने पर भी हिंदी अभिव्यक्ति की भाषा। इससे पहले 'खुले कमरे बंद द्वार' और 'तिनका तिनका घोंसला' कविता-संग्रह प्रकाशित। 'चीड़ों में ठहरी बयार', 'कोहरा और धूप', 'प्रतिनिधि डोगरी और कश्मीरी एकांकी', 'प्रतिनिधि-कहानियां : डोगरी', प्रतिनिधि कहानियां : कश्मीरी', 'सहसुमुखी' (बंसीलाल सूरी की कविताएं), प्रतिनिधि-पंजाबी कहानियां (जम्मू-कश्मीर) का सम्पादन। अनेक संकलनों के सहयोगी कवि।

लम्बे अर्से तक 'हमारा साहित्य' और 'शीराज़ा' (हिंदी) का सम्पादन।

'वासांसि जीर्णानि' (महेश एलकुंचवार का मराठी नाटक) और 'देवयानी' (नरसिंह देव जम्बाल का डोगरी नाटक) के हिंदी अनुवादों का अनेक केन्द्रों में सफल मंचन।

हाल ही में जम्मू में एकल चित्र-प्रदर्शनी के बाद अन्य केन्द्रों में प्रदर्शनी की तैयारी।

सम्प्रति : सचिव, जे. एण्ड के. अकादमी ऑफ आर्ट, कल्चर एण्ड लैंग्वेजिज़, नहर मार्ग, जम्मू-180005.

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation